

उपलब्धि

तेल की गुणवत्ता नापने के लिए युवाओं ने बनाया सेंसर, आइआइटी इंदौर ने 25 लाख की फंडिंग दी

खाने के जले तेल से बनाए जा रहे बायो डीजल, पशु आहार और साबुन

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: आमतौर पर होटलों में खाद्य पदार्थ बनाने के लिए बार-बार एक ही तेल का बार-बार उपयोग किया जाता है। मगर दोबारा उपयोग किए हुए तेल से बना भोजन सेहत की दृष्टि से नुकसानदायक होता है।

अब जले तेल से शहर के युवा बायो डीजल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए बकायदा युवाओं ने सेंसर और मोबाइल एप्लीकेशन बनाए हैं जो चंद सेकंड में तेल की गुणवत्ता बताते हैं। इसके आधार पर जले तेल को बायो डीजल, साबुन बनाने और पशु आहार के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा। युवाओं ने उपकरण का नाम डोको रखा है।

प्रोजेक्ट को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी) इंदौर ने 25 लाख रुपये की फंडिंग कर दी।



जले तेल से बायो डीजल बनाने वाले स्टार्टअप को फंडिंग का चेक सौंपा गया। सौजन्य

आइआइटी के इन्व्यूवेशन सेंटर के विशेषज्ञ प्रोजेक्ट को मार्गदर्शन भी दे रहे हैं।

ब्रिड आयल इंडिया प्राइवेट लि.

नामक कंपनी यह काम कर रही है। अभिजीत सिंह सोलंकी और देवेंद्र पंवार ने प्रोजेक्ट को आइआइटी के समक्ष प्रस्तुत किया था। बीई कर चुके

स्टार्टअप के लिए दिया प्रेजेंटेशन

आइआइटी इंदौर के टेक्नोलॉजी इन्व्यूवेशन हब और दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के लिए स्टार्टअप के संबंध में आवेदन मंगवाए गए थे। इसमें अभिजीत और देवेंद्र ने अपने इस स्टार्टअप को लेकर प्रेजेंटेशन दिया। इन्व्यूवेशन हब के डायरेक्टर अमरदीप श्रीवास्तव ने बताया कि ग्रीन एनर्जी के अंतर्गत ब्रिड आयल (डोको) प्रोजेक्ट को मंजूर किया। इसमें 25 लाख का निवेश आइआइटी ने किया है।

अभिजीत ने बताया कि देशभर में ग्रीन एनर्जी पर काम किया जा रहा है। खाने के जिस भी तेल को तीन बार से अधिक गर्म किया जाता है वह

स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। उसमें टोटल पोलर कंपाउंड्स (टीपीसी) 25 प्रतिशत से अधिक हो जाते हैं। बार-बार तलने पर यह कैंसर और दिल की बीमारियों का कारण बनता है। इसे ध्यान में रखते हुए बायो डीजल बनाने के बारे में विचार किया।

शुरुआती दौर पर नमकीन कारखानों, चिप्स फैक्टरी, होटल और कैफे से जला तेल इकट्ठा किया जा रहा है। तेल को जांचने के लिए कंपनी ने सेंसर बनाया है। उपकरण को तेल में डालते ही टीपीसी पता लगती है। वे बताते हैं कि टाउनशिप में रहने वालों से भी जला तेल इकट्ठा करने की योजना है। फिलहाल इसके लिए कई समूह बनाए जा रहे हैं। अभी कारखानों, होटल और कैफे से तेल लिया जा रहा है।

कैफे से आया आइडिया

बीकाम कर चुके देवेंद्र पंवार का कहना है कि जले तेल से बायो डीजल बनाने का आइडिया तब आया जब मैं खुद एक कैफे संचालित करता था। वहां जले तेल को फेंक देता था। मगर एक बार रिन्युएबल एनर्जी के बारे में विचार आया है कि इसे अन्य कार्यों में इस्तेमाल किया जा सकता है। फिर मैं और अभिजीत ने डोको प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया। सेंसर के माध्यम से तेल की गुणवत्ता व टीपीसी का पता लगता है। उसके बाद मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से तेल का कहां इस्तेमाल किया जा सकता है, उसके बारे में जानकारी मिलती है। फिलहाल जले तेल को साबुन बनाने में उपयोग किया जा रहा है। बायो डीजल संयंत्रों को भी सप्लाई किया जाता है।